पाठ ५ कठपुतली

शब्दार्थ

1 कठपुतली - काठ की पुतली अर्थात दूसरों के इशारों पर नाचने वाली

2 पाँवों - पैरों
3 छंद - विचार
५ इच्छा - अभिलाषा

प्र०1 कठपुतली को गुस्सा क्यों आया ?
उत्तर कठपुतली को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि वह बहुत दिनों से धागे में बंधी होने के कारण दूसरों की अँगुलियों के इशारों पर नाचती रही इसलिए वह मुक्त होकर अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करना चाहती थी।

प्र०2 कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़े होने की इच्छा है। लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती ?
उत्तर कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन धागे से बँधी होने के कारण स्वतंत्र रूप से खड़ी नहीं हो सकती। दूसरों के अधीन होने के कारण वह दूसरों की इच्छा के बिना अपने हाथ पैर तक नहीं हिला सकती।

प्र०3 पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी?
उत्तर पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतली को इसलिए अच्छी लगी क्योंकि आजादी सबको पसंद होती है, कोई भी दूसरों के अधीन नहीं रहना चाहता तथा किसी भी कठपुतली को धागे से बँधे रहकर दूसरों की मर्जी से नाचना

पसंद नही होता इसलिए पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतली को अच्छी लगी।

प्र॰५ पहली कठपुतली ने स्वयं कहा कि – 'ये धागे / क्यों हैं मेरे आगे-पीछे ? इन्हें तोड़ दो; मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो'—तो फिर वह चिंतित क्यों हुई कि— ये कैसी इच्छा / मेरे मन में जगी ? नीचे दिए गए वाक्य से विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर पहली कठपुतली बंधन का जीवन जीते-जीते दुःखी हो गई थी पराधीनता पर उसे क्रोध आ रहा था इसलिए उसने आजाद होकर आत्मनिर्भर होने की इच्छा जताई, लेकिन जब सारी कठपुतलियाँ उसकी हाँ में हाँ मिलाने लगी और उसके नेतृत्व में विद्रोह के लिए तैयार होने लगी। इससे वह पहली कठपुतली डर गई कि सबकी जिम्मेदारी लेकर इतना बड़ा कदम कैसे उठाए क्योंकि अब तक सारी कठपुतलियाँ दूसरों पर निर्भर रही हैं। वह इसलिए चिंतित है कि एकदम से मिली आजादी से उसके कदम लड़खड़ा तो नही जाएंगे।

कविता से आगे

प्र॰१ 'बहुत दिन हुए / हमें अपने मन के छंद छुए' । इस पंक्ति का क्या अर्थ हो सकता है ?

उत्तर इस पंक्ति के द्वारा कठपुतलियाँ कहती हैं कि बहुत दिनों से हमने अपने मन की बात नही सुनी, अपने मन के अनुसार कोई काम नही किया और अपनी इच्छाओं, उमंगों और खुशियों को दबाए रखा। हम पराधीनता के जीवन जीते-जीते स्वयं को बिल्कुल भूल ही बैठे हैं।

25|8

पाठ ५

प्र०२ नीचे दो स्वतंत्रता आंदोलनों के वर्ष दिए गए है। इन दोनों आंदोलनों के दो दो स्वतंत्रता सेनानियों के नाम लिखो।

(क) सन् 1857 – रानी लक्ष्मी बाई, मंगलपांडे

(ख) सन 1942 – जवाहर लाल नेहरु, महात्मा गांधी

भाषा की बात

प्र०1 जब काठ और पुतली दो शब्द एक साथ हुए, कठपुतली बन गया और इससे बोलने में सरलता आ गई। इसी प्रकार के कुछ शब्द बनाइये –
जैसे – काठ (कठ) से बना कठगुलाब, कठफोड़ा
हाथ – हथ   सोना – सोन   मिट्टी – मट

उत्तर हाथ और करघा – हथकरघा
सोना और चिड़िया – सोनचिड़िया
मिट्टी और मैला – मटमैला
सोना और परी – सोनपरी
सोना और जूही – सोनजूही
हाथ और गोला – हथगोला

प्र०2 कविता की भाषा मे लय तालमेल बनाने के लिए प्रचलित शब्दों और वाक्यों में बदलाव होता है जैसे-आगे-पीछे अधिक प्रचलित शब्दों की जोड़ी है लेकिन कविता में 'पीछे-आगे' का प्रयोग हुआ है। यहाँ आगे का 'बोली ये धागे' से ध्वनि का तालमेल है। इस प्रकार के शब्दों की जोड़ियों में आप भी परिवर्तन कीजिए – दुबला-पतला, इधर-उधर, ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, गोरा-काला, लाल-पीला आदि।

उत्तर पतला - दुबला
उधर - इधर
नीचे - ऊपर
बाएँ - दाएँ
काला - गोरा
पीला - लाल